दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांकः 23.05.2015 **बी.ए., (प्रथम वर्ष)**

Time: 10.00 am to 01.00 pm **पूर्णांकः75**

हिन्दी : (अनिवार्य) प्रश्न पत्र-3

भक्तिकालीन काव्य

I. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 03x10=30

1. 'चढ़ा आसाढ़' में जायसी ने वर्षा ऋतु का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'जाके प्रिय न राम वैदेही पद' के माध्यम से तुलसी की भक्ति की विवेचना कीजिए।
3. 'तेरी सौं, मेरी सुनि मैया, अबहि बियाहन जैहौं,' के माध्यम से कृष्ण की बाल-सुलभ बातों से तुलसी की भक्ति की विवेचन कीजिए।
4. कबीर ने सतगुरु की महिमा किस तरह प्रकट की है? समझाइए।
5. कृष्ण के प्रति मीरा के प्रेम की व्याख्या कीजिए।

II. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 05x06=30

1. जायसी का जीवन परिचय दीजिए।
2. राम के वचन सुनकर उनकी प्रजा पर क्या प्रतिक्रिया हुई? बताइए।
3. 'तू दयालु, दीन हौं तू दानी हौं भिखारी ' पद में तुलसी की दास्य भक्ति अपने चरम पर है व्याख्या कीजिए।
4. 'नागमति वियोग' खण्ड का परिचय दीजिए।
5. 'ब्याज विवेरत ऊधो' पंक्ति का मर्म स्पष्ट कीजिए।
6. 'हरिगुण का वर्णन नहीं किया जा सकता' इसके बारे में कबीर क्या कहते हैं?
7. 'बसों मेरे नैनन में नंदलाल पद से मीरा ने कृष्ण के सौंदर्य का जो वर्णन किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
8. 'बार-बार बलि जाऊँ' पंक्ति के माध्यम से मीरा की भक्ति पर प्रकाश डालिए।

III. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । 05x03=15

1. कातिक सरद चंद उजियारी। जग सीतल हौं बिरहै जारी।
   चौदह करा कीन्ह परगांसू। जनहुँ जरै सब धरति अकासू।।

अथवा

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ फिमि काढ़ी।
अब धनि देवस बिरह भारती। जरै विरह ज्यों दीपक बाती।

2. जो गति जोग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि म्यानी।
   सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी।।

अथवा

तुलसी सर नाम गुलामु है राम को,
जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।।

3. मैया, मैं तो चंद्र-खिलौना लैहो।
   जैहौं लोटि धरनि पर अबहीं, तेरी गोद न ऐहों।।

अथवा

तेरी सौं सुनु सुनु मेरी मैया।
आवल उबरि परच्चौं ता ऊपर मारन कौं दौरी इक गैया।।

4. चार भुजा के भजन में, भूलि परे सब संत।
   कबिरा सुमिरै तासु को जाके भुजा अनंत।।

अथवा

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै भुइ धरै, तब पैठे घर माहिं।।

5. मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरौ न कोई।
   जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।

अथवा

मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर-सुधा-रस मुरली राजत,उर बैजंती माल।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांक: 24.05.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm — **बी.ए. (प्रथम वर्ष)** — **पूर्णांक:75**

हिन्दी : (अनविार्य) प्रश्न पत्र-4
रीतिकालीन काव्य

I. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3x10=30

1. शिवराज को राम का अवतार बताते हुए भूषण ने जो भाव व्यक्त किए हैं। उनकी व्याख्या कीजिए।
2. प्रेम का धागा टूट जाने पर क्या होता है? अपने शब्दों में लिखिए।
3. बिहारी का जीवन-परिचय देते हुए उसकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. अपने सवैया में घनानंद ने सौंन्दर्य की सृष्टि किस प्रकार की है? अपने शब्दों में समझाइए।
5. 'कवि बोधा भयो अलमस्त महा' इस पंक्ति के संदर्भ में पठित छंद की व्याख्या कीजिए।

II. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4x5=20

1. शिवराज की सेना के आगमन का जो चित्र भूषण ने खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2. रहिमन पानी राखिए - इस दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
3. 'तरुवर फल नहिं खात है....? इस दोहे में रहीम ने क्या उपदेश दिया है?
4. 'छुटी न सिसुता' में व्यक्त सौंन्दर्य की विवेचना कीजिए।
5. 'गीधे गीधहिं तारी' के दृष्टांत में बिहारी क्या कहना चाहते है?
6. घनानंद के जीवन और कृतित्व का परिचय दीजिए।
7. 'छवि रो सदन ----------' पंक्ति में कृष्ण के सौंदर्य की व्याख्या कीजिए।

III. निम्न पध्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 5x5=25

1. कंस के कुटिल बलबंसन विधसिबे कौं
   भयो जदुराय बसुदेव को कुमार है।
   पृथी पुरहूत साहि के सपूत सिवराज,
   मलेच्छन के मारिबें कौं तेरो अवतार है।

   अथवा

   साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धरि
   सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
   भूषन भनतवाद-बिहद नगारन के
   नदी नद मद गैबरन के रलत है।

2. रवीरा सिर तें काटिए, मलियत नमक बनाय।
   रहिमन करुए मुखनको, चहिअत इहै सजाय।।

   अथवा

   रीहमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
   जहा काम आवे सुई, कहाँ करे तरवारि।।

3. समै समै सुन्दर सबै, रुपु कुरुपु न कोई।
   मन की रुचि जेती जितै, तित तेजी रुचि होई।

   अथवा

   कब कौ हेरतु दीन रट होत न स्याम सहाइ।
   तुम हूँ लागी जगत-गुरु, जग-नाइक, जग-बाई।।

4. छबि को सदन, मोदमंदित बंदन - चंद,
   तृषित चखनि लाल, कब धौं दिखायहाँ
   चटकीलो भेख करे, मटकीली भाँति सों ही,
   मुरली अधर धरें लटकत आयहौ।

   अथवा

   वहै चतुराई सों चिताई चाहिबे को छबि
   वहै छैलताई न छिनक बिसरति है।
   आनंदनिधान प्रानप्रीतम सुजान जू की,
   सुधि सब भाँतिन सो बेसुधि करीत है।

5. जबतें ब्रजराज को रूप लख्यौ तबतें उर और न आनतु है।
   निसिबासर संग रहै उनके हमकों धौं कबै पहिचानतु है।।

   अथवा

   कहू सो का कहियै अब है यह बात अनैसी कहे तें कहावत।
   कोऊ कहा कहिहै सुनि है कही काहू की कौनौ हमें नहीं भावत।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांक: 25.05.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm **बी.ए. (प्रथम वर्ष)** **पूर्णांक:75**

हिन्दी : (अनिवार्य) प्रश्न पत्र-5

तुलनात्मक साहित्य

I. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **3x10=30**

1. पंजाबी और हिन्दी भाषा की विकास यात्रा पर तुलनात्मक विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. अमृता प्रीतम की भाषा शैली पर विचार कीजिए।
3. सीताकांत महापात्र की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।
4. 'शेष प्रश्न' की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।
5. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका पर एक निबंध लिखिए।

II. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5x7=35**

1. भारतीय साहित्य और विश्व साहित्य पर एक लेख लिखिए।
2. तुलनात्मक साहित्य और मनोविज्ञान पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. उडिया तथा हिन्दी साहित्य में काल विभाजन के विविध रूपों पर प्रकाश डालिए।
4. कवि का परिचय देते हुए 'दीवान खाना' कविता का विश्लेषण कीजिए।
5. 'शेष प्रश्न' में शरत बाबू ने नारी चरित्र की आधुनिक व्याख्या की है। इस कथन की विवेचना कीजिए।
6. भारतीय साहित्य की मूलभूत प्रवृत्तियों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
7. मोहन आलोक का परिचय देते हुए 'कविता' का साराशं लिखिए।
8. भारतीय साहित्य और भारतीयता की संकल्पना पर अपने विचार लीखिए।

III. निम्न पध्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **2x5=10**

1. चेहरे थे असंख्य
   आँरवे थी
   दर्द सभी में था
   जीवन का देश सभी ने जाना था।

या

   सिर नहीं
   है सिर की जगह
   औंधी रखी हँडिया
   देह
   लाठी का टुकडा
   हाथों की जगह पतले डंडे

2. कविता का असर।
   तन पर नहीं
   मन पर होता है
   मन की जंग लगी तलवार को

या

   ''कगार का वृक्ष हो चली हूँ बेटा
   बीच -बीच में, आते रहना
   पता नहीं, तुझे फिर देख भी
   पाऊँगी या नहीं''

.....